P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

'ऐ लड़की' – अनुभवों की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति अम्मू

दीप नारायण चौहान
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
विद्यासागर विश्वविद्यालय,
मिदनापुर, कोलकाता, भारत

सारांश

कृष्णा सोबती ने 'ऐ लड़की' के माध्यम से समाज के उस स्थिति का वर्णन करती है। जिसे एक स्त्री स्वयं समाज से, परिवार से अनुभूत करती है । इसके पहले जितनी भी स्त्रियां थी। वह परिवार और समाज में जिस अनुभव को अनुभूत की वह अपने साथ ही मरने के बाद लेकर चली गई। जिसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को न हो सका। ऐसी ही सीख का वर्णन ''ऐ लड़की' ' में है। जिसमें मां बेटी आपस में वार्तालाप करते हुए। एक नई दुनिया का सृजन करने का बागडोर अपने कंधे पर ले लेती है। 'ऐ लड़की' की कथा अपने शिल्प में अपने कथ्य को संजोए हुए। हर पल नई सीखें, सलाहें, उलाहनें, अफसोस, शड्यंत्र को उजागर करती हुई आगे बढ़ती हैं। यह कथा पितृसत्तात्मक कहानी को बयां करती है। जिसके केंद्र में गंभीर समस्याएं और इस समस्याओं का खत्म होने की संभावनायें भी मौजूद हैं।

मुख्य शब्द : 'ऐ लड़की' उपन्यास, अम्मू, पितृसत्तात्मक कहानी।

प्रस्तावना

'ऐ लड़की' उपन्यास का शीर्षक से ही संबोधित होता है कि मां अपने बेटी को अमानवीय सा शब्दों का प्रयोग कर रही है। परंतु इस शब्द में मां के जीवन की संपूर्ण कथा संप्रेषित होता है। कई आलोचकों को लगता है कि शीर्षक कहीं न कहीं अस्वाभाविक सा लग रहा है।चूकि पंजाबी बोलचाल उनके शब्दों में हमेशा देखा जाता रहा है तो क्यों न उन्होंने 'ऐ कुड़िए या ओ कुड़ी'[1] रख दी। जो कि बहुत ही प्यारा और आत्मीय वाला शब्द है,परंतु ऐसा करने से इस लघु उपन्यास का मर्म नष्ट हो जाता ।लेखिका का जो उद्देश्य है। इस शीर्षक को लिखने के पीछे कहीं न कहीं नष्ट हो जाता और लोगों के जहन में इसका अलग ही प्रभाव पड़ता। 'ऐ लड़की' कह कर मां बेटी को अगाह करते हुए अपनी जीवन भर की जो संचित अनुभव निधि सौपना चाहती है।वह खत्म हो जाती। पाठको में पढ़ने का जिज्ञासा भी खत्म हो जाता।

कृष्णा सोबती ने 'ऐ लड़की' जैसा लघु उपन्यास नब्बे दशक की शुरुआत में लिखीं। यह वह दशक था। जब भारत की अर्थव्यवस्था और समाज को बदलने में स्त्रियों की भूमिका अहम थीं। स्त्रियां अपने अधिकारों से परिचित हो रही थी। उसी समय सोबती ने 'ऐ लड़की' कहानी के माध्यम से समाज के उस सच्चाई से हमें रूबरू कराई जिससे उनके जीवन को एक नई दिशा मिली। यह कहानी 'मां और पुत्री' के बीच एक बातचीत का संवाद है। जिसमें मां अपने संचित अनुभव को मृत्यु के अंतिम समय वस्तुनिष्ठ ढंग से देना चाहती है। बेटी भी जानना चाहती है कि उसकी मां का जीवन कैसा रहा ?,कौन सी परिस्थितियों का सामना उसे करना पड़ा?। किन–किन बातों पर उसका दिल दुखा? क्या उसके दिल की हर तमन्ना पूरी हुई ?इन सारी बातों को विस्तृत रूप में जानना चाहती है। बातचीत के दौरान अम्मू यह कहती है कि तुम्हारे नाना के यहां लाड– प्यार– चाव की कमी नहीं थी। खाने–पीने खेलने पहने को बहुत कुछ पर कहीं न कहीं एक गहरी लकीर खींची पड़ी थी लड़की । ''हमारे भाई को भेजा गया। कॉलेज और हम बहनों की पढ़ाई, पंडित, ग्रंथि और मौलवी के पास। जरा सोचो, मैं अपने भाई की तरह पड़ती तो क्या बनती? क्या होती मैं और क्या होते मेरे बच्चे। सच तो यह है कि लड़कियों को तैयार ही जानमारी के लिए किया जाता है–भाई पढ़ रहा है, जाओ दूध दे आओ, भाई सो रहा है, जाओ कंबल ओढा आओ, भाई खा चुके है तो अब तुम भी खा लो।"2 असमानता की नींव तो समाज ने ही डाली है। माता पिता इसे पुख्ता करते हैं। माता–पिता ही बेटी का भविष्य अंधेरे में डाल देते हैं। माता पिता बेटी को बेटा नहीं समझते, बल्कि समाज के रूढ़िवादी विचारों के अनुसार उन्हें परिवार का गुलाम समझते हैं। उनकी अपनी कोई सत्ता नहीं, कोई पहचान नहीं, उनका एक मात्र काम है । समाज के बनाये गये नियमों का पालन करना। उसकी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं। स्त्री को अपनी स्वतंत्रता का हक है। उन्हें भी अपने मन

मुताबिक काम करने की इजाजत होनी चाहिए। उनका जीवन पुरुषों के समान ही है। वह भी इसी समाज में रहती है। उन्हें भी अधिकार हैं। अपने हिसाब से जीने, मरने ,काम करने की। अम्मू कहती है 'तुम पर कोई रोक टोक नहीं जो चाहो, कर लो। एक बात याद रहे कि अपने से भी आजादी चाहिए होती है। देती हो कभी अपने को? तुम्हारी मनमानी की बात नहीं कर रही, कुछ मनचाहा भी कर सकती हो कि नहीं?।'[3] इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि समाज में स्त्रियों को भी खुद की स्वतंत्रता चाहिए। वह आगे भी कहती है कि' तुम किसी के अधीन नहीं। स्वाधीन हो। लड़की, यह ताकत है। सामर्थ्य। शक्ति। समझ रही हो न?'[4] अम्मू चाहती है कि लड़की भी आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो। वह नारी की स्वतंत्रता का पक्षधर है। वह चाहती है कि सुसन और चित्रा दोनों आत्मनिर्भर हो, जिससे किसी के सामने हाथ फैलाने का नौबत ना आए। वह सुसन को सलाह देती है कि 'उसका वक्त तब सुधरेगा जब वह अपनी जीविका आप कमाने लगेगी। मर्द काम करता है, तो उसे इवज में अर्थ–धन प्राप्त होता है औरत दिन–रात जो खटती है वह बेगार के खाते में ही न! भूली रहती है अपने को मोह ममता में ।अनजान ।बेध्यान। वह अपनी खोज–खबर न लेती तो कौन उसे पूछनेवाला है।'[5] वह स्पष्ट शब्दों में कहती है कि स्त्री को अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। अपना अस्तित्व को खुद बचाना होगा। यह ध्यान रहे पुरुष अपनी महता को कभी भी कम होने नहीं देता। उसका दबदबा हमेशा बरकरार रहता है। अम्मू इस कथन को भली भांति समझती है।

अध्ययन का उद्देश्य

अगर स्त्री को सशक्तिकरण होना है। तो उसे आर्थिक और मानसिक रूप से आत्मनिर्भर होना ही पड़ेगा। आज का समय भौतिकतावादी युग का है। विदेश के अधिकतर लोग चाहे पुरुष हो या नारी स्वावलंबी है। यही वजह है कि आज विदेश के लोग सबसे ज्यादा विकसित है। हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है। अगर पारिवारिक स्थिति पर बात करें तो परिवार में माँ की भूमिका बहुत अहम होती है। नारी की जिस प्रकार का सोच, प्रवृत्ति होती है उसी प्रकार का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। क्योंकि बच्चा अधिक से अधिक समय मां के पास ही गुजारता है। माँ जो शिक्षा देती है। वही उसके साथ जीवनोपरांत रहता है। जो मुश्किल समय में उन्हें रास्ता दिखाते हैं। चूकि मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना है, सबसे बड़ा त्याग है, सबसे बड़ी विजय है। मातृत्व के अभाव में बच्चों का विकास अधूरा है। यही वजह है कि अम्मू अपने बच्चे को हर तरह से सशक्त बनाना चाहती है। कहती है कि 'सूसन, शादी के बाद किसी के हाथ का झुनझुना नहीं बनना अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना'[6] वह जानती है कि शादी के बाद स्त्री की स्थिति और भयावह बन जाती है। शादी के बाद औरत पूरे परिवार के लिए शिकारी की माझी बन जाती है। वह आगे कहती है कि 'घर का यह खेल बराबरी का नहीं, ऊपर–नीचे का है। घर का स्वामी कमाई से परिवार के लिए सुविधाएँ जुटाता है। साथ ही अपनी ताकत कमाता–बनाता है। इसी प्रभुताई के आगे गिरवी पड़ी रहती है। बच्चों की मां।'[7] अम्मू आगे कहती है। मां की स्थिति परिवार में केवल दासी की है। उसका परिवार में कोई अस्तित्व नहीं, कोई अस्मिता नहीं। उसे दुख है कि 'माँ पैदा करती है। पाल पोसकर बड़ा करती है। फिर उसी की कुर्बानी ! मां को टुकड़ों में बांटकर परिवार उसे यहां–वहां फैला देता है। कारण तो यही न, समूची रहकर कहीं उठ खड़ी न हो! मां को प्योसर गाय या धाय बनाकर रखे रहते हैं । खटती रहे । सुख देती रहे । उसका काम इतना ही है'[8] कहानी में यह अहसास है कि घर का यह खेल बराबरी का नहीं है। इसलिए स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता जरूरी है। कृष्णा सोबती अम्मू के माध्यम से स्त्री को उस रहस्य को जानना चाहती है। जिसे जानकर ही इस संसार में अपनी शक्ति को पहचान पाएंगी। उन्हें अफसोस नहीं होगा कि वह इस जीवन में कुछ हासिल नहीं कर पाई। और हासिल न करने का कारण अज्ञानता, इसी अज्ञानता को दूर कर अम्मू अपने अनुभव के द्वारा जो इस समाज से परिवार से पाई उसे देकर वह उस तमाम स्त्रियों को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए आवाहन कर रही है। वह पितृसत्तात्मक जंजाल से उस हर एक स्त्री को मुक्त करना चाहती है, जो अब तक सामाजिक रूढ़ियों अंधविश्वासों से जकड़ी हुई थी। क्योंकि उनमें ज्ञान का अनुभव का अभाव था उसको बताने वाला कोई नहीं था। यही वजह है कि अपनी बेटी से सवाल भर करती है ताकि वह इस पाठ को ठीक से याद कर ले समझ ले 'तुम तो अपने आप में आजाद हो'[9] कृष्णा सोबती जानती है। स्त्री को पहले खुद अपने अंदर आजाद होना होगा। अपने अंदर उस सकारात्मक सोच को लाना होगा। जिसके जरिए वह समाज और परिवार में अपने अधिकार को पाने में सक्षम हो पाएगी। अगर स्त्री को यह कठिन पाठ पढ़ने का मौका मिल जाए, तो वह अपनी शक्ति पहचान कर इस संसार में निरंतर अपने को अग्रसर करती रहेगी। इस उपन्यास में अम्मू अपनी बेटी को यह यकीन दिलाना चाहती है कि यह संसार स्त्रियों के बिना नहीं चल सकता। यह शाश्वत सत्य है। स्त्री जीवन निरंतर रहने वाली सच्चाई है। इसे आत्मा की ही तरह न कोई काट सकता है और न जला सकता है। पुरुष भले ही अपने को परम समझता हो, परंतु उस पुरुष को पुरुष बनाने में स्त्री का ही हाथ होता है। स्त्री ही उसे इस संसार में लाती उसे जन्म देती है और पाल–पोसकर बड़ा करती है। पिता का मात्र एक खून का रिश्ता होता है, क्योंकि उसका खून ही उसमें संचालित होता है, परंतु उसे पाल–पोसकर स्त्री ही उसे संसार में उसका स्थान दिलाती है।

कृष्णा सोबती के यहां नारी दो रूपों में मौजूद एक जो परंपरावादी सामाजिक बंधनों में अपने को जकड़ी हुई पाती है। वही दूसरी ओर उसे छुटकारा पाने वाली अम्मू जो अपने अनुभव के द्वारा यह प्रयास कर स्त्री को स्वतंत्र जीवन देना चाहती है। इनकी रचनाओं में स्त्री का क्रमिक विकास के साथ–साथ उनकी व्यक्तिगत विकास पर भी उन्होंने बल दिया है प्राचीन जीवन मूल्यों से, नवीन जीवन मूल्यों की ओर निरंतर अग्रसर की है नारी को। कृष्णा सोबती के यहां स्त्री जिस जमीन पर खड़े होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। वह जमीन पर पुरुषवादी मानसिकता का अधिपत्य है। उस अधिपत्य को

तोड़ कर अपने लिए एक सुरक्षित जमीन तैयार करना चाहती हैं। जिसमें किसी का दखल न हो। आज नारी अपने नारीत्व को तलाश रही है। समाज के द्वारा दी गई भूमिका जैसे मां, बहन, पत्नी और बेटी आदि से परे एक अलग पहचान खोज रही है, जो उसकी अस्मिता से जुड़ी है। कृष्ण सोबती ने नारी को दो रूपों में चित्रित किया है । एक मातृत्व और दूसरा नारीत्व के रूप में। इन दोनों रूपों में उन्होंने परंपरावादी मातृत्व को पीछे, छोड़ नारीत्व को एक अलग पहचान दिलाई। आधुनिक नारी की मुक्ति की कामना को स्वर देने में कृष्णा सोबती पीछे नहीं हटी। उन्होंने ने स्त्रियों के लिए समाज में एक अलग स्थान सुनिश्चित की। इससे पहले स्त्रियों की आवाज को पुरुष लेखकों द्वारा अनसुना कर दिया जाता था।कोई भी लेखक अपने लेखनी में स्त्रियों की स्वतन्त्रता की बात नहीं की। कृष्णा सोबती ने अम्मू के माध्यम से कह उठती है कि 'मैं तितली नहीं माँग रही, अपना हक मांग रही हूं। मुझे दे दो। ताजी हवा में सांस लेने दो'[10] इस तरह वह अपनी स्वतंत्रता की मांग रखती हैं। अम्मू में स्त्री स्वतंत्रता की संपूर्ण चेतना है। दिन रात गृहस्थी की गाड़ी चलाने वाली स्त्री के पास अंततः कुछ नहीं बचता, इस तथ्य को जानकर ही वह लड़की से कहती है। 'ऐ लड़की' अपने आप में होना परम है श्रेष्ठ है। 'ऐ लड़की' का कथ्य आज के संदर्भ में जी रहे स्त्री की चुनौतियों को व्याख्यायित करता है,' भारतीय स्त्री की अस्मिता और व्यक्तित्व की खोज करनेवाले लोग इस कहानी में मूर्तिमान एक ऐसी नारी को पा सकते हैं जो अपने जीवन के अंतिम दिनों में स्त्री जीवन का शास्त्र नैरिट कर देती है ।'[11] इस तरह यह उपन्यास जीवन को संपूर्णता से जीने का संदेश प्रस्तुत करता है । साथ ही साथ स्त्री, पुरुष के समान स्वतंत्रता और समानता की पक्षधर है ।

निष्कर्ष

अंततः 'ऐ लड़की' की माँ (अम्मू) का संदेश कितना बड़ा है इस कथन से पता चलता है।जब वह कहती है'अपनी समरूप उत्पन्न करना मां के लिए बड़ा महत्वकारी है। पुण्य है। बेटी के पैदा होते ही मां सदाजीवी हो जाती है। वह कभी नहीं मरती। हो उठती है। वह निरंतरा। वह आज है, कल भी रहेगी। मां से बेटी तक। बेटी से उसकी बेटी, उसकी बेटी से भी अगले बेटी। अगली से भी अगली। वही सृष्टि का स्रोत है'[12]

सन्दर्भ ग्रथ सूची

1. *मेहेर छबिल कुमार,कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2016,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 194*
2. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 68*
3. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 58*
4. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 50*
5. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 56*
6. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 53*
7. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 55*
8. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 74*
9. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 58*
10. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 59*
11. *प्रकाश, पल्लवी, बदलता सामाजिक परिदृश्य और कृष्णा सोबती, शिवालिक प्रकाशन,नई दिल्ली, प्रथम संस्कार 2013,पृष्ठ संख्या 35*
12. *सोबती, कृष्णा, 'ऐ लड़की', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति 2012,पृष्ठ संख्या 42*